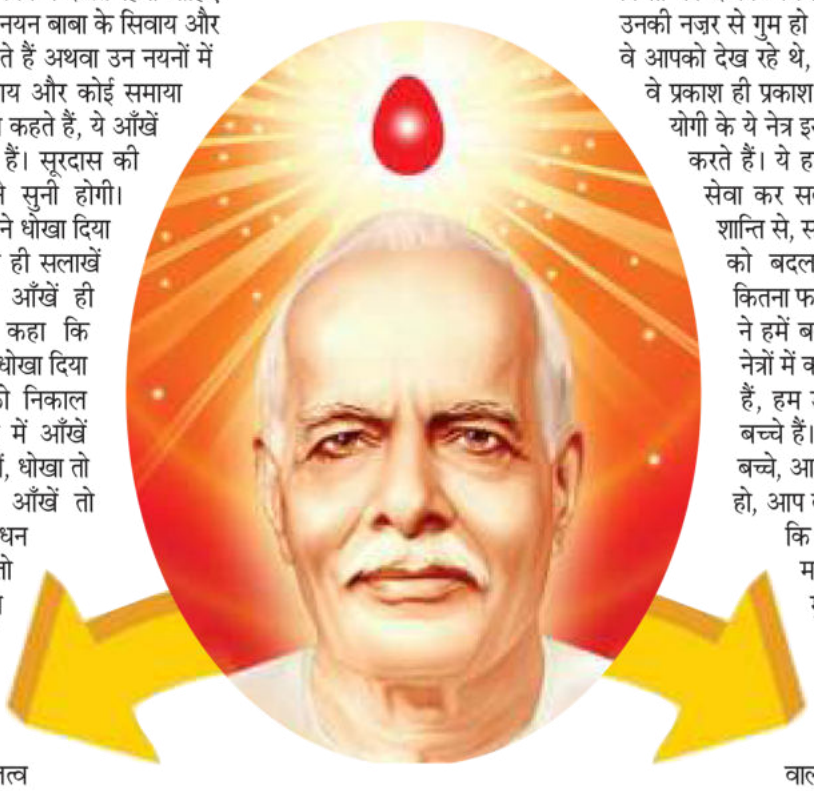

नयनों में उसका रूप, कानों में उसकी शिक्षायें

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

हर ब्रह्मा वत्स का अनुभव है कि बाबा हमारे नयनों में बसे हुए रहते हैं और हर पल हमारे कानों में कुछ कहते रहते हैं। हमें यह सदा अपने में देखते रहना चाहिए कि क्या हमारे नयन बाबा के सिवाय और कुछ देखते रहते हैं अथवा उन नयनों में बाबा के सिवाय और कोई समाया रहता है? बाबा कहते हैं, ये आँखें धोखा दे देती हैं। सूरदास की कहानी आपने सुनी होगी। उसकी आँखों ने धोखा दिया तो उसने लोहे ही सलाखें लेकर अपनी आँखें ही निकाल दीं। कहा कि आँखों ने मुझे धोखा दिया इसलिए उनको निकाल दिया। वास्तव में आँखें धोखा नहीं देतीं, धोखा तो मन देता है। आँखें तो देखने के साधन हैं। धोखा तो मनुष्य का मन देता है। जो भी व्यक्ति हमारे सामने आता है सिर्फ उसका पाँच तत्व का पुतला अर्थात् स्थूल शरीर ही सामने आता है, वही दिखाई पड़ता है। ज्ञानियों के लिए तो बाबा ने कहा है कि आत्मा सामने आनी चाहिए। लेकिन आत्मा की बात तो एक तरफ, हरेक व्यक्ति के प्रति हमारे जो इम्प्रेशन्स(प्रभाव) हैं और जो हमने उसके जीवन में अच्छा या बुरा देखा है, वो साथ-साथ सामने दिखायी पड़ते हैं अर्थात् जो व्यक्ति सामने आता है उसका कर्मों का जो चित्र बना हुआ है वो आँखों के सामने आता है। ये स्थूल आँखें नहीं, मन रूपी नेत्र। ये तो आना नहीं चाहिए। ये क्यों आता है? हम दूसरों के अवगुण क्यों देखें? हमें देखना क्या चाहिए? बाबा ने कहा है एक आँख में मुक्ति और दूसरी आँख में जीवनमुक्ति होनी चाहिए। पहले मुक्ति में जाना है, बाद में जीवनमुक्ति में क्योंकि मुक्तिधाम जाने बगैर जीवनमुक्तिधाम में नहीं आ सकते। हमारी आँखों में क्या रहना चाहिए? कभी बाबा कहते हैं, आपकी आँखों में सामने वालों को नूर दिखायी पड़ना चाहिए। जब आप किसी को देखेंगे अथवा दृष्टि देंगे, आप उनकी नज़र से गुम हो जायेंगे। पहले जो वे आपको देख रहे थे, उसकी जगह पर वे प्रकाश ही प्रकाश देखेंगे। ज्ञानी के, योगी के ये नेत्र इस प्रकार की सेवा करते हैं। ये हमारी आँखें बहुत सेवा कर सकती हैं, प्रेम से, शान्ति से, सद्भावना से दूसरों को बदल सकती हैं तो कितना फर्क पड़ता है। बाबा ने हमें बदला है। बाबा के नेत्रों में क्या है? हम आत्मा हैं, हम उनके प्यारे, मीठे बच्चे हैं। बाबा कहते हैं... बच्चे, आप साधारण रूप में हो, आप को मालूम नहीं है कि आप कितने महान हैं, श्रेष्ठ हैं! मुझे तो आपके भविष्य के डबल क्राउन का रूप दिखायी पड़ रहा है। दो ताज वाला देवी-देवता रूप दिखायी पड़ता है। बाबा को इस शरीर में छिपी हुई आत्मा का सारा पार्ट, सारा भाग्य देखने में आता है। हम तो गुनाहगार रहे, पाप कर्म किये हुए हैं। देह अभिमान के वश, विकारों के वश हमारा जीवन ठीक नहीं गुजरा। एक जन्म नहीं, वो भी 63 जन्म। बाबा कहते हैं, तुम जन्म-जन्मान्तर के पापी हो। लेकिन बाबा को क्या देखने में आता है? उसको दिखाई पड़ता है कि अभी समय पूरा होने को आया है, ये मेरे बच्चे फिर गुल-गुल बनने वाले हैं। इसलिए वे हमें मीठे बच्चे कहना छोड़ते नहीं और हमारे ऊपर प्यार बरसाते रहते हैं। हमारे ऊपर उनकी कृपा दृष्टि बनी रहती है क्योंकि वे हमारे में यही देखते हैं कि ये बदलने वाले हैं। इसलिए हमारे नेत्रों में बाबा ही बसे हुए रहने चाहिए। लेकिन फिर देह अभिमान में आकर बाबा को भूलकर और-और बातें मनुष्य के मन में आ जाती हैं। अगर हमारी आँखों में बाबा ही बसे रहें तो हमारा कल्याण हुआ ही पड़ा है, हमारा बेड़ा पार है। हमारी मंज़िल नज़दीक दिखायी पड़ेगी। सतयुग जल्दी आ जायेगा।

गीत यह भी कहता था कि बाबा हमारे कान में कुछ कहता है। बाबा कहते हैं, तुम बच्चे परमत की बातें सुनते हो अर्थात् मनुष्यमत को सुनते हो, शास्त्रमत को सुनते हो। यह गलत सुनते हो। बाबा कहते हैं, बुरा मत सुनो। पाप का सुनना और सुनाना बंद करो। यहाँ आते ही बाबा बच्चों को यही सुनाता है कि अच्छा क्या है, पाप क्या है, पुण्य क्या है, शरीर क्या है, आत्मा क्या है। यह जानने के बाद, समझने के बाद बुरा सुनना और सुनाना बन्द हो जाता है। बाबा यह भी कहते हैं कि दुःख का देना और दुःख का लेना भी बंद करो। संसार में कोई ने यह नहीं कहा है दुःख दो भी नहीं और लो भी नहीं। यह तो कहा है कि दुःख न दो, दुःख दोगे तो दुःख पाओगे लेकिन दुःख नहीं लो - यह किसी ने नहीं कहा। सिर्फ बाबा ने ही यह राज़ सुनाया है। यह बहुत बड़ी बात है कि दुःख मत लो। कोई व्यक्ति किसी से हमदर्दी करता है अर्थात् कोई तकलीफ में है उससे हमदर्दी करता है, यह ठीक है। आपने देखा होगा, बच्चा बीमार है तो माँ रोती है, दुःख लेती है। बच्चा बीमार है, हमदर्दी होनी चाहिए। उसकी सेवा करो। डॉक्टर के पास ले जाओ अथवा डॉक्टर को बुलाओ, दवाई दिला दो। उस पर ध्यान दो। समय निकाल कर उसकी सेवा करो। उसको शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना से शक्ति दो। उसके बदले रोने से क्या होगा? दुःख का देना और दुःख का लेना - यह मोह के कारण होता है। इससे आत्माओं को इफेक्ट(असर) आ जाता है। इफेक्ट आने से डिफेक्ट(खराबी) आ जाती है। डिफेक्ट आने से फिर इफेक्ट आता है, इफेक्ट आने से फिर डिफेक्ट और आता है। यह दोनों का आन्तरिक सम्बन्ध है। एक का दूसरे पर निर्भर है। अतः इफेक्ट नहीं आना चाहिए। इससे दुःख ही दुःख बढ़ता जाता है।

अब भगवान आया है। संगमयुग का अतीन्द्रिय सुख का जीवन होना चाहिए। अगर अभी भी हमें दुःख है तो हमारा क्या भाग्य हुआ? दुःख लेना यह तो हमारी गलती है, हमारी बेसमझी है। अतः कभी कोई के दुःख देने पर भी आप नहीं लेना। इसका एक तरीका है - सी नो इविल..., बुरा न देखना...। नेत्रों में बाबा समाया हुआ हो और कानों में बाबा की बातें गूंजती हों तो आप न दुःख देंगे और न लेंगे।

मुम्बई-कल्याण वेस्ट। भाजपा के नवनियुक्त केन्द्रीय मंत्री कपिल पाटिल के 'जन आशीर्वाद यात्रा' में उन्हें बधाई देने के पश्चात् रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अलका दीदी।

देवली-राज.। रक्षाबंधन के अवसर पर उपसेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए प्रसिद्ध समाजसेवी,उद्योगपति एवं जन सेवा समिति के अध्यक्ष नवल मंगल जी। साथ हैं जयपुर वैशाली नगर सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. चन्द्रकला दीदी तथा स्थानीय संचालिका ब्र.कु. निर्मल बहन।

आगरा-ईदगाह। 'प्रभु मिलन' सेवाकेन्द्र पर आयोजित जन्माष्टमी उत्सव कार्यक्रम में केन्द्रीय विधि एवं न्याय राज्यमंत्री प्रो. एस.पी. सिंह बघेल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अश्विना बहन,सेवाकेन्द्र संचालिका एवं सब ज़ोन सचिव। मौके पर ब्र.कु. राज बहन, ब्र.कु. आशु बहन, ब्र.कु. अमर तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

रामपुर-बुशहर(हि.प्र.)। एस.डी.एम. यादविन्द्र पॉल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कृष्णा बहन। साथ हैं ब्र.कु. सावित्री बहन।

जयपुर-राजापार्क(दुर्गापुरा)। डॉ. अर्चना शर्मा,उपाध्यक्ष एवं मीडिया चेयरपर्सन को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात व प्रसाद देते हुए ब्र.कु. सन्नू बहन।

अमृतसर-पंजाब। मेडिकल एजुकेशन कैबिनेट मिनिस्टर ओ.पी. सोनी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. डॉ. किरण बहन।

नीमच-म.प्र.। रक्षाबंधन के अवसर पर सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में विधायक दिलीप सिंह परिहार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सविता दीदी।

सोलन-हि.प्र.। ज्ञान चर्चा के पश्चात् यशवंत सिंह परमार युनिवर्सिटी ऑफ होर्टिकल्चर एंड फॉरेस्ट्री के वाइस चांसलर को ईश्वरीय साहित्य व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. कल्पना बहन।